भारतीय काव्यशास्त्र प्रश्नोत्तर--०१

भारतीय काव्यशास्त्र महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

- वास्तविक काव्यलक्षण का प्रारंभ किस आचार्य से होता है जिन्होंने शब्द और अर्थ के सहभाव (शब्दार्थोसहितौ काव्यम्) को काव्य की संज्ञा दी है -
-> **भामह से**
- *शब्द अर्थ संगम सहित भरे चमत्कृत भाय।*
  जग अद्भुत में अद्भुतहिँ, सुखदा काव्य बनाए ॥
  पंक्ति है --> **ग्वाल कवि (रसिकानंद)**

- प्रतिभा के दो भेद (सहजा और उत्पाद्या) किसने किये --> **रुद्रट ने**
- प्रतिभा को काव्य निर्माण का एकमात्र हेतु मानने के कारण किस आचार्य के प्रतिभावादी कहा जाता है --> **पंडितराज जगन्नाथ को**
- प्रतिभा के दो भेद 'कारयित्री' और 'भावयित्री' किस आचार्य ने किए हैं --> **राजशेखर ने**
- भावयित्री प्रतिभा किसमे होती है --> **सहृदय में**
- भारतीय काव्यशात्र में 'भावक' से अभिप्राय है? --> **सहृदय या आलोचक से**
- "शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली" कथन किसका है--> **दण्डी का**
- रीति सिद्धांत की उपलब्धि है --> **शैली तत्वों को महत्व देना**
- वामन के अनुसार गुण और रिति का संबंध है --> **अभेद**

- आचार्य कुंतक के अनुसार वक्रोक्ति के कितने भेद है --> **6**
- वक्रोक्ति सिद्धांत की महत्वपूर्ण उपलब्धि है--> **कलावाद की प्रतिष्ठा**
- कवः कर्म काव्यम् , (कवि का कर्म ही काव्य है) कथन किसका है --> **कुन्तक का**
- औचित्य विचार चर्चा , ग्रंथ किस आचार्य का है --> **क्षेमेंद्र का**
- क्षेमेंद्र के अनुसार औचित्य के प्रधान भेद हैं--> **27**
- क्षेमेंद्र ने रस का प्राण किसे माना है --> **औचित्य को**
- ध्वन्यालोक की टीका 'ध्वन्यालोकलोचन' किसने लिखी --> **अभिनवगुप्त ने**
- ध्वनि सिद्धांत का प्रादुर्भाव व्याकरण के स्पोट सिद्धांत से हुआ है

- वैयाकरण ने वाक् (वाणी) के कितने प्रकार माने है?--> **4**
  १• परा, 2• पश्यंती, ३• मध्यम, ४• बैखरी
- आनन्दवर्धन का समय है --> **नवीं शती का मध्य**
- आनन्दवर्धन ने व्यंग्यार्थ के तारतम्य के आधार पर काव्य के कितने भेद किये है--> **3 ; ध्वनि, गुणिभूत व्यंग, चित्र**
- आनन्दवर्धन ने ध्वनि के कितने प्रकार माने है--> **3 ; वस्तु ध्वनि, अलंकार ध्वनि,रसध्वनि**
- आनंद वर्धन के अनुसार रीति के चार नियामक है --> **वक्त्रोचित्य , वाच्योचित्य , विषयोचित्य , रसोचित्य**
- अभिनव गुप्त ने ध्वनि के कितने भेद किए हैं --> **35**
- मम्मट ने के ध्वनि के शुद्ध भेदों की संख्या स्वीकार की है --> **51**

- पंडित राज जगन्नाथ काव्य के कितने भेद किए हैं --> **4**
  उत्तमोत्तम--> **उत्तम-->** मध्यम--> **अधम**
- आचार्यो ने व्यंग्यार्थ की प्रधानता गौणता एवं अभाव के आधार पर काव्य के कितने भेद किए हैं --> **3 ;**
  उत्तम --> मध्यम--> **अधम**
- आधुनिक काल के प्रारंभिक समय में से सेठ कन्हैयालाल पौद्दार ने काव्यकल्पद्रुम नामक ग्रंथ की रचना की जो आगे चलकर रसमंजरी और अलंकार मंजरी के रुप में प्रकाशित हुआ
- हृदयदर्पण नामक ग्रंथ की रचना किसने की --> **भट्टनायक ने**
- हिंदी वक्रोक्ति जीवित की भूमिका किसने लिखी --> **नगेंद्र ने**
- रस निरुपण के प्रथम व्याख्याता और रस निरुपण का प्रथम ग्रंथ किसे माना जाता है --> **भरत मुनि व**

उनके नाट्यशास्त्र को

- भरत ने 8 स्थाई भाव , 8 सात्विक भाव, 33 संचारी भावों का उल्लेख किया है
- किस आचार्य ने रीती को काव्य की आत्मा मान कर रस के गुण के अंतर्गत स्थान दिया है और कांति गुण का वर्णन करते हुए रस से युक्त माना है --> **वामन**
- आचार्य रुद्रट ने शांत रस का स्थाई भाव किसे माना है --> **समयक ज्ञान**
- रस को ध्वनि के साथ युक्त करने का श्रेय किसे है --> **आनंद वर्धन को**
- भोज ने 12 रसों का विवेचन किया है जिनमें चार नवीन है --> **प्रेयस-->** शांत--> **उदात्त-->** उध्दात
- भोज ने रस का मूल किसे माना है--> **अहंकार को**
- वाक्य रसात्मक काव्यम् कथन किसका है --> **विश्वनाथ का**

- आचार्य शुक्ल ने काव्य की आत्मा किसे माना है--> **रस को**
- भट्टलोल्लक ने रस की अवस्थिति किसमें मानी है--> **अनुकार्य में**
- किस आचार्य ने रस सूत्र की व्याख्या के संधर्भ में काव्य में तीन शक्तियों की कल्पना की (अभिधा, भावक्त्व, भोजकत्व) -->भट्टनायक ने
- अभिनव गुप्त रस को मानते हैं --> **व्यंग**
- किस आलोचक के मतानुसार साधारणीकरण कवि की अनुभूति का होता है --> **नगेंद्र के अनुसार**
- भारतीय काव्यशास्त्र में भावक से अभिप्राय है --> **सहृदय या आलोचक से**
- भावक(सहदय्) के कितने प्रकार माने गए है --> **4** १ अरोचकी [विवेकी], २ सतृणाभ्यव्हारि [अविवेकी], ३ मत्सरी [पक्षपात पूर्ण आलोचना करने वाला], ४ तत्त्वाभिनिवेशी

- विभाव के कितने भेद हैं --> **2[आलम्बन और उद्दीपन]**
- आलंबन विभाव के कितने भेद हैं --> **2 ; १•आलंबन २•आश्रय**
- सात्विक अनुभाव की संख्या कितनी मानी गई है --> **आठ**
- आचार्य शुक्ल ने विरोध और अविरोध के आधार पर संचारियों के कितने वर्ग किये हैं --> **चार ;** १• सुखात्मक २• दु:खात्मक ३• उभयात्मक ४• उदासीन
- श्रृंगार को मूल रस किस आचार्य ने माना है--> **भामह ने**
- भक्ति रस का रस को मूल रास किसने माना है--> **मधुसूदन सरस्वती एव रूप गोस्वामी ने**
- शंकुक के अनुसार भरतमुनि के रस सूत्र में आये “संयोग ” शब्द का अर्थ है --> **अनुमान**

- रस सिद्धांत के संबंध में तन्मयतावाद के प्रतिष्ठापक है--> **अभिनव भरत**
- एक के बाद एनी अनेक भावों का उदय होता है तो उसे कहते है --> **भाव सबलता**
- अवहित्था और अपस्मार क्या है ?--> **संचारी भाव का एक प्रकार**
- किस आलोचक के मतानुसार साधारणीकरण कवि भावना का होता है --> **नगेंद्र**
- अभिधा, भावकत्व और भोग काव्य के तीन व्यापार किस आचार्य ने माने हैं --> **भट्टनायक ने**
- भाव-सन्धि, भाव सबलता तथा भाव-शांति किस भाव की प्रमुख स्थितियां है --> **संचारी भाव की**
- अलंकार संप्रदाय के प्रतिष्ठापक आचार्य है --> **भामह**
- भरत मुनि ने कितने अलंकारों का उल्लेख किया है ? --> **4**

१• उपमा २• रूपक ३• दीपक ४• यमक

- अलंकार रत्नाकर नामक ग्रंथ के रचयिता है --> **शोभाकर मित्र**
- दण्डी ने गुणों की संख्या कितनी मानी है --> **10**
- आचार्य भोज ने अनुसार गुणों की संख्या है --> **24**
- वामन ने गुणों की संख्या मानी है --> **20**
- मम्मट, भामह तथा आनंद वर्धन ने गुणों के भेद माने है --> **3**
- गुणों के प्रमुख भेद है --> **3**

  १• माधुर्य, १• औज, ३• प्रसाद
- वृत्ति का सर्वप्रथम वर्णन किस ग्रंथ में मिलता है--> **नाट्यशास्त्र में**
- भारतीय काव्यशास्त्र में कितनी काव्य वृत्तियां मानी ग मानी गई है --> **3**

  १• परुषा

  २• कोमल

३• उपनागरी

- सर्वप्रथम दोष की परिभाषा किस आचार्य ने प्रस्तुत की--> **वामन ने**
- दंडी में कितने काव्य दोषों का वर्णन किया है --> **10**
- वामन ने कितने काव्य दोषों का वर्णन किया है --> **20**
- विश्वनाथ ने कितने दोषों का वर्णन किया है --> **70**
- काव्य दोषो का सर्वप्रथम निरुपण किस ग्रंथ में मिलता है --> **भारत कृत नाट्य शास्त्र में**
- दस के स्थान पर तीन काव्य गुणों की स्वीकृति प्रथम किस आचार्य ने की--> **भामह ने**
- प्रेयान नामक नवीन रस की उद्भावना किस आचार्य ने की।--> **रुद्रट**
- आलोक का हिंदी भाष्य किसने लिखा--> **आचार्य विश्वेश्वर ने**

- भावप्रकाश नामक ग्रंथ के रचयिता है--> **शारदातनय**
- दण्डी ने कितने काव्य हेतु माने है --> **3**
  १• नैसर्गिकी प्रतिभा
  २• निर्मल शास्त्र ज्ञान
  ३• अमंद अभियोग [अभ्यास]
- रुद्रट और कुंतक ने कितने काव्य हेतु माने है --> **3**
  १• शक्ति, २•व्युत्तपत्ति, ३• अभ्यास
- वामन ने कितने काव्य हेतु माने है --> **3**
  १• लोक, २• विद्या , ३• प्रकीर्ण
- व्यंग के तारत्मय के आधार पर काव्य के कितने भेद माने जाते है --> **3**
  १•ध्वनि, २• गुणीभूत व्यंगचित्र, ३• चित्र
- काव्यरुप(इंद्रियगम्यता) के आधार पर काव्य के कितने भेद है --> **2**

१• दृश्य काव्य, २•श्रव्यकाव्य

- दृश्यकाव्य[रूपक] के कितने प्रमुख भेद है --> **10**
- श्रव्यकाव्य के कितने भेद हैं --> **3**

१•गद्य, •२ पद्य ,३ चंपू [गद्य-पद्यमय काव्य]

- लक्षणा के कुल कितने भेद माने जाते हैं --> **12**
- किस लक्षणा को अभिधा पुच्छभूता कहते है--> **रूढ़ि लक्षणा को**
- किस आचार्य ने लक्षणा के 80 भेदों का उल्लेख किया है --> **विश्वनाथ ने**
- मम्मट ने लक्षणा के कितने भेदों का उल्लेख किया है --> **12**
- किस काव्य को चित्रकाव्य कहा जाता है --> **अधम काव्य को**

- बंध के आधार पर काव्य के कितने भेद हैं --> **2 (१॰ प्रबंध २॰ मुक्तक)**
- पूर्वापर सम्बन्ध निरपेक्ष काव्य -रचना को कहते हैं--> **मुक्तक**
- पूर्वापर सम्बन्ध निर्वाह -सापेक्ष रचना को कहते है --> **प्रबंध**
- संस्कृत में साहित्य के लिए किस शब्द का प्रयोग होता है --> **वाङ्मय**
- तात्पर्य, क्या है --> **अभिधा, लक्षणा, व्यंजना की तरह चौथे प्रकार की नई शब्द-शक्ति**
- भामह 'अभाववादी' कहलाते है क्योंकि --> **उन्होंने काव्य में ध्वनि की सत्ता स्वीकार नहीं की है**
- प्रतिभा मात्र को ही काव्य का हेतु आवश्यक सर्वप्रथम किसने माना --> **हेमचंद्र ने**
- गुणिभूत व्यंग के कितने भेद होते हैं --> **8**
- वाच्यता असह,का अन्य नाम है --> **रस ध्वनि**

- भरत ने हास्य रस के कितने भेद माने हैं --> **6**
- कुंतक ने वक्रोति के भेद व उपभेद माने है --> **6 भेद व 41 उपभेद**
- हेतुर्न तु हेतव:’ पंक्ति है--> **मम्मट की**
- जनश्रुति के आधार पर किस आचार्य कोरस के प्रवर्तक होने का श्रेय दिया जाता है --> **नंदिकेश्वर को**
- भरत के नाट्यशास्त्र में भावों की संख्या 49 गिनाई है -->

  १• स्थाई भाव--> **8**

  २• व्याभिचारी भाव--> **33**

  ३• सात्विक भाव--> **8**

  8+33+8--> **49**
- आचार्य भामह ने काव्य हेतु किसे माना है --> **प्रतिभा को**

- किस आचार्य का कथन है कि संसार में जो कुछ पवित्र उज्जवल एव दर्शनीय है ,वह श्रृंगार के भीतर समाविष्ट हो सकता --> **भरत मुनि**
- श्रृंगार रस को रसराज माना जाता है --> **कार्य -व्यापार की व्यापकता के कारण**
- भरत मुनि के रस सूत्र के प्रथम व्याख्याता भटलोल्लट के रस- विवेचन का सैद्धांतिक आधार है --> **मीमांसा**
- रस को दो वर्गो (सुखकारक व दुःख कारक)में बाँटकार किन आचार्य ने करुण ,भयानक,वीभत्स और रौद्र को दुःखकारक तथा शेष को सुख का कारक माना --> **रामचंद्र एव गुणचन्द्र ने**
- नवरस नामक ग्रंथ के लेखक हे --> **बाबू गुलामराय**
- 'रस कलश' नामक ग्रंथ के लिए के लेखक है--> **अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध**

- सर्वप्रथम किस आचार्य ने रस को काव्य आत्मा घोषित किया--> **विश्वनाथ**
- रुद्रट तथा कुंतक ने काव्य-हेतुओं की संख्या मानी है--> **3**

  १• शक्ति, २•व्युत्पत्ति ”३•अभ्यास
- राज शेखर ने रस का प्रतिष्ठाता किसे माना है --> **नंदीकेश्वर को**
- भरत मुनि ने कितने रस, कितने गुण, कितने दोष तथा कितने अलंकारों का उल्लेख किया है --> **रस-->** 8, गुण--> **10, दोष-->** 20, अलंकार--> **4**
- शब्दार्थो सहित काव्यम् , काव्य काव्य की इस परिभाषा में दोष है--> **अतिव्याप्ति**
- प्रेयान नामक नवीन रस की उद्भावना किस आचार्य ने की।--> **रुद्रट**
- आलोक का हिंदी भाष्य किसने लिखा--> **आचार्य विश्वेश्वर ने**

- भावप्रकाश नामक ग्रंथ के रचयिता है-->
शारदातनय
- दण्डी ने कितने काव्य हेतु माने है --> **3**
१• नैसर्गिकी प्रतिभा
२• निर्मल शास्त्र ज्ञान
३•अमंद अभियोग[अभ्यास]

रुद्रट और कुंतक ने कितने काव्य हेतु माने है --> **3**

१•शक्ति
२•व्युत्तपत्ति
३• अभ्यास

- वामन ने कितने काव्य हेतु माने है --> **3**
१• लोक,
२•विद्या ,
३•प्रकीर्ण

- व्यंग के तारत्मय के आधार पर काव्य के कितने भेद माने जाते है --> **3**

  १• ध्वनि,

  २• गुणीभूत व्यंगचित्र ,

  ३• चित्र

- काव्यरुप(इंद्रियगम्यता) के आधार पर काव्य के कितने भेद है --> **2**

  १• दृश्य काव्य,

  २• श्रव्यकाव्य

- दृश्यकाव्य[रूपक] के कितने प्रमुख भेद है --> **10**
- श्रव्यकाव्य के कितने भेद हैं --> **3**

  १• गद्य,

  २. पद्य ,

  ३. चंपू [गद्य-पद्यमय काव्य]

- लक्षणा के कुल कितने भेद माने जाते हैं --> **12**

- किस लक्षणा को अभिधा पुच्छभूता कहते है--> **रूढ़ि लक्षणा को**
- किस आचार्य ने लक्षणा के 80 भेदों का उल्लेख किया है --> **विश्वनाथ ने**
- मम्मट ने लक्षणा के कितने भेदों का उल्लेख किया है --> **12**
- किस काव्य को चित्रकाव्य कहा जाता है --> **अधम काव्य को**
- बंध के आधार पर काव्य के कितने भेद हैं --> **2**
  १• प्रबंध,
  २• मुक्तक
- पूर्वापर सम्बन्ध निरपेक्ष काव्य -रचना को कहते हैं--> **मुक्तक**
- पूर्वापर सम्बन्ध निर्वाह -सापेक्ष रचना को कहते है --> **प्रबंध**

- संस्कृत में साहित्य के लिए किस शब्द का प्रयोग होता है --> **वाङ्मय**
- 'तात्पर्य' क्या है --> **अभिधा, लक्षणा, व्यंजना की तरह चौथे प्रकार की नई शब्द-शक्ति**
- भामह 'अभाववादी' कहलाते है क्योंकि --> **उन्होंने काव्य में ध्वनि की सत्ता स्वीकार नहीं की है**
- प्रतिभा मात्र को ही काव्य का हेतु आवश्यक सर्वप्रथम किसने माना --> **हेमचंद्र ने**
- गुणिभूत व्यंग के कितने भेद होते हैं --> **8**
- वाच्यता असह, का अन्य नाम है --> **रस ध्वनि**
- भरत ने हास्य रस के कितने भेद माने हैं --> **6**
- कुंतक ने वक्रोति के भेद व उपभेद माने है --> **6 भेद , व 41 उपभेद**
- 'हेतुर्न तु हेतव:' पंक्ति है--> **मम्मट की**
- जनश्रुति के आधार पर किस आचार्य कोरस के प्रवर्तक होने का श्रेय दिया जाता है --> **नंदिकेश्वर**

को

बाहरी कड़ियाँ

- काव्यशास्त्र सम्बन्धी महत्वपूर्ण तथ्य

"https://hi.wikibooks.org/w/index.php?title=भारतीय_काव्यशास्त्र_प्रश्नोत्तर--०१&oldid=12939" से लिया गया

Last edited २ years ago by अनुनाद सिंह

सामग्री CC BY-SA 3.0 के अधीन है जब तक अलग से उल्लेख ना किया गया हो।